साहित्यः समकालीन सरोकार

रंजना मिश्रा

Scanned with OKEN Scanner

© लेखक

प्रथम संस्करण : 2015

ISBN 978-93-83962-18-1

प्रकाशक
अनुज्ञा बुक्स
1/10206, वेस्ट गोरख पार्क
शाहदरा, दिल्ली-110 032
email: anuugyabooks@gmail.com

मूल्य : 399 रुपये

आवरण रेखांकन : मुन्ना

मुद्रक : जयमाया ऑफसेट, दिल्ली-110 032

Scanned with OKEN Scanner

अनुक्रम

भूमिका 5
पुरोवाक् 7

खण्ड - एक : काव्य-विमर्श

1. रामचरितमानस : लोकमंगल का विधान 11
2. बदलते जीवन-मूल्य और समकालीन कविता 16
3. प्रगतिवाद : सामाजिक चेतना की अभिव्यक्ति 20
4. भारतीय धर्म निरपेक्षता के आधार पुरुष-कबीर 23
5. 'पसीना बोलता है'— एक दृष्टि में (समीक्षा) 27

खण्ड - दो : कथा-साहित्य समीक्षा

6. साहित्य का सामाजिक सरोकार : नयी कहानी के सन्दर्भ में 33
7. समकालीन हिन्दी साहित्य में दलित-विमर्श 39
8. समकालीन हिन्दी कहानी में सामाजिक अवचेतना 42
9. मैला आँचल : संवेदना और शिल्प 45

खण्ड - तीन : स्त्री केन्द्रित चिन्तन

10. स्त्री शक्ति का प्रमुख स्तम्भ-झलकारी 51
11. आधुनिक हिन्दी कहानी : महिला साहित्यकारों का प्रदेय 54
12. हिन्दी महिला कथा-लेखन : विकास-यात्रा 57
13. महिला सशक्तीकरण : भारतीय सन्दर्भ में 60
14. समकालीन भारतीय समाज में अपराध : महिलाओं के विशेष सन्दर्भ में 64
15. महिला असुरक्षा और बढ़ते अपराध में दूरदर्शन व निजी चैनलों की भूमिका 70

Scanned with OKEN Scanner

खण्ड - चार : हिन्दी और मीडिया

16. हिन्दी पत्रकारिता : 'भारत के सन्दर्भ में' 75
17. हिन्दी भाषा का बदलता स्वरूप : मीडिया के सन्दर्भ में 79
18. हिन्दी में विज्ञान लेखन की प्रासंगिकता 83
19. संचार क्रान्ति : बदलता सामाजिक परिदृश्य 86
20. जनसंचार माध्यमों में प्रयुक्त हिन्दी भाषा का स्वरूप 88

खण्ड - पाँच : उच्च शिक्षा में गुणात्मक सुधार

21. उच्च शिक्षा में गुणवत्ता प्रबन्धन की प्रासंगिकता : वर्तमान सन्दर्भ 95
22. उच्च शिक्षा में गुणवत्ता के विविध आयाम : मध्य प्रदेश के सन्दर्भ में 99
23. समग्र सतत मूल्यांकन : उच्च शिक्षा में गुणात्मक सुधार का माध्यम 101

खण्ड - छह : बुन्देली संस्कृति एवं विविध विमर्श

24. बुन्देलखंड : सांस्कृतिक अभिचेतना : बाह्य स्वरूप 107
25. लोक-साहित्य : बुन्देलखंड के झरोखे से 111
26. बुन्देली धरती : सामाजिक विसंगतियाँ 115
27. इक्कीसवीं सदी में नैतिक मूल्यों का क्षरण : भारतीय सन्दर्भ में 118
28. भारत में मानवाधिकारों सम्बन्धी जागरूकता 121
29. मादक द्रव्यों के सेवन की प्रवृत्ति : भारतीय सन्दर्भ में 124

खण्ड - सात : पर्यावरण चिन्तन

30. पर्यावरण प्रबन्धन : वर्तमान सन्दर्भ में 129
31. जनसंख्या वृद्धि और पर्यावरण प्रदूषण 134
32. औद्योगीकरण के दुष्प्रभाव : वर्तमान सन्दर्भ में 138
33. भारत में पर्यावरण जागरूकता 142
सन्दर्भ ग्रन्थ-सूची 144

Scanned with OKEN Scanner

आज का आदमी अपने जीवन की सार्थकता इस बात में समझता है कि वह भीड़ में भी पहचान लिया जाये। व्यक्तित्व के प्रति जागरूकता और अस्तित्व की सार्थकता उसे स्वस्थ मूल्यों के प्रति अग्रसर करती है। समकालीन कविता में आधुनिक भावबोध के साथ ही तर्क, विचार एवं चिन्तन की प्रधानता होने से वैज्ञानिक बोध भी समाविष्ट है। समकालीन कविता जीवन की व्याख्या है। वह जीवन और परिवेश को संवेदना के धरातल पर अनुभव करके शिल्पगत सौन्दर्य के साथ अभिव्यक्त करती है।

(इसी पुस्तक से)

₹ 399

9 789383 962181

अनुज्ञा बुक्स
दिल्ली-110032

Scanned with OKEN Scanner